International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 11-11-2019; Accepted: 12-12-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 1; 2020; Page No. 51-53

आदर्श नारी / माँ एवं संस्कारयुक्त शिक्षा

डॉ राधेश्याम मिश्र [1], प्रियंका मिश्रा [2]

[1] प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष शिक्षा, ए.के.एस. विश्वविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थी शिक्षा, ए.के.एस. विश्वविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा सफलता की कुंजी है। बिना शिक्षा के जीवन अपंग है। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार की व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह चला सकेगी। एक अशिक्षित नारी न तो स्वयं विकास कर सकती है और न ही परिवार के विकास में सहयोग दे सकती है। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि महिलाओं को घर का काम, बच्चों का पालन–पोषण ही करना है तो महिलाओं के लिए शिक्षा की कोई आवश्यकता नही है। शिक्षा की कमी के कारण महिलाएं परिवार के साथ–साथ स्वयं के पोषण पर ध्यान नहीं दे पाती है।

भारतीय समाज में नारी को मातृशक्ति के पद पर प्रतिष्ठित रखा है, उसने ऐसे श्रेष्ठ मानव रत्न समाज को दिए जिनका नाम आज भी अमर है। जब–जब उसे गृहस्वामिनी, ग्रहलक्ष्मी, कुलमाता के रूप में आदर दिया है तब–तब भारत का नाम विश्व में गूंजा है। आज भारतीय नारियां देश की संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म की संरक्षिका बनी हुई है। साथ ही घर, गृहस्थी, परिवार, देश, समाज एवं घर के संचालन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

मूल शब्दः नारी, माँ, संस्कारयुक्त, शिक्षा, परिवार

प्रस्तावना

भारतीय नारियॉ संस्कृति, लोकजीवन, धर्म और मानवता के विकास की संवाहक है। उसने एक पुत्री, ममतामयी माता, पत्नी के कर्त्तव्यों का तो निर्वहन किया ही साथ ही साथ ब्रम्ह ज्ञानी, शिक्षिका, कावाग्या, चिकित्सक आदि के रुप में अपनी अलग पहचान बनाई है। ऋगवेद की अनेक ऋचाएं – लोपामुद्रा, विश्ववारा, निवारी, घोषणा एवं इंद्राणी आदि विदुषी स्त्रियों की रची हुई है। आश्वलायन ग्रह्य सूत्र में गार्गी, बाचक्नवी, बड़वा प्रतिथेयी और सुलभा मैत्रेयी, इन तीन शिक्षिकाओं को ऋषि रुप में संबोधित किया गया है। महाभारत में असाधारण विदुषी सुलभा जिसने विवाह न करके जीवन पर्यन्त ब्रम्हचारिणी रहने का व्रत लिया है और प्रसिद्ध ज्ञानी राजा जनक को योग क्रिया के प्रदर्शन से विस्मृत कर दिया था। राजनीति के गूढ रहस्यों का ज्ञान भी स्त्रियों को भलीभाति था जिसका उदाहरण द्रौपदी और कुंती के रुप में प्राप्त होता है इस ग्रंथ से ज्ञात होता है कि विराट ने अपनी राजधानी में अपनी पुत्री उत्तरा नृत्य सिखाने के लिए नृत्यशाला स्थापित की थी जिसमें नगर की कन्याएं भी शिक्षा प्राप्त करती थी।[1]

बाल्मीकि रामायण इस बात की साक्षी है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों की समुचित व्यवस्था थी जिसका उदाहरण कौशिल्या थी जो मंत्र पूर्वक हवन करती थी। राम और लक्ष्मण के साथ सीता भी नियमित रुप से संध्या करती थी –

कौशिल्यापि तदा देवी रात्रिं स्थित्वा समाहिता।
प्रभातेत् वकरोत् पूजां विष्णोः पुत्र हितैषिणः।।
सा क्षोम वसना हष्टा नित्यं व्रत परायणा।
अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्रावत्कतर्मगता।।
ततस्तु जल शेषण लक्ष्मणोड़त्यकरो तदा।
वाग्यतास्ते त्रयः संध्यां समुयासतं संहिताः।।[2]

कबीर जी ने कहा है कि या तो जननी भक्त को जन्म दे जो शास्त्र में प्रमाण देखकर सत्य को स्वीकार करके असत्य साधना त्यागकर अपना जीवन धन्य करे। या किसी दानवीर पुत्र को जन्म दे जो दान धर्म करके अपने शुभकर्म बनाये। या फिर शूरवीर बालक को जन्म दे जो परमार्थ के लिए कुर्बान होने से कभी न डरता हो। सत्य का साथ देता है, असत्य तथा अत्याचार का डटकर विरोध करता है। उसके चलते या तो स्वयं मर जाता है या तो अत्याचारी की सेना को मार डालता है। अपने उद्देश्य से डगमग नहीं होता। यदि ऐसी अच्छी संतान उत्पन्न न हो तो निःसंतान रहना ही माता के लिए शुभ है। पशुओं जैसी संतान को गर्भ में पालकर अपनी जवानी को क्यों नष्ट करे। इससे तो बांझ रहना ही उत्तम है।

या तो माता भक्त जनै, या दाता या शूर।
या फिर रहै बांझड़ी, क्यों व्यर्थ गंवावै नूर।।

फ्रावेल ने स्त्री शिक्षा की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है–

"माताएं आदर्श अध्यापिकाएं हैं और घर द्वारा दी जाने वाली शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और स्वाभाविक होती है।"[3]

बालक जन्म के समय असहाय होता है, केवल मां के सिवाय कोई भी उसको जीवित नहीं रख सकता है। केवल मां एक ऐसी है जो अपने बच्चे के लिए पता नहीं कितने कष्ट सहकर उसका पालन पोषण करती है, परंतु उसको कोई भी कष्ट नहीं होने देती। बालक जन्म के बाद ही नहीं बल्कि मां के गर्भ में अनेक बाते सीखता है। जैसा कि अभिमन्यु के विषय में कहा जाता है कि उसने अपने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह को तोड़ना सीख लिया था। इस प्रकार बालक जहां एक ओर अपने पिता से न्याय तथा कर्त्तव्य पालन की भावना सीखता है वहीं दूसरी ओर वह अपनी मां से प्रेम तथा मानवता जैसे गुणों को सीखता है। यदि मां शिक्षित होगी तो पारिवारिक जीवन बेहतर होगा। जब परिवार सुखी एवं संपन्न होगा तो निश्चित ही उस परिवार के सदस्यों में उदारता और आत्म संयम के गुण आ जाएंगे। इस प्रकार संस्कार युक्त शिक्षा एक आदर्श मां ही सफलतापूर्वक अपनी संतान को देती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व (Importance and need of Research)

साधारणतया लोगों का विश्वास है कि जैसे माता–पिता होते हैं वैसी ही संतान होती है। इसका अभिप्राय है कि बालक रंग रुप आकृति आदि में माता–पिता से मिलता जुलता है। दूसरे शब्दों में उसे अपने माता–पिता के शारीरिक और मानसिक गुण प्राप्त होते हैं। यदि माता–पिता विद्वान हैं तो बालक भी विद्वान होता हैं।

गोडार्ड का मत है कि मंद बुद्धि वाले माता–पिता की संतान भी मंद बुद्धि ही होती है और तीव्र बुद्धि वाले माता–पिता की संतान तीव्र बुद्धि वाली होती है। उसने यह बात कालिकाक नामक एक सैनिक के वंशजों का अध्ययन करके सिद्ध किया और कालिकाक ने अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला[4] –

तालिका क्रमांक 1

कालिकाक ग मंद बुद्धि स्त्री	विवरण	कालिकाक ग तीव्र बुद्धि स्त्री
480	कुल वंशज	496
143	मंद बुद्धि	03
46	सामान्य	ग
36	अवैध संतान	ग
32	वेश्याएं	ग
24	शराबी	ग
08	वेश्यालय का स्वामी	ग
03	मिर्गी रोगी	ग
ग	अपराधी	ग
ग	सम्मानित स्थान	शेष 493

इस प्रकार नारी के शिक्षित होने एवं आदर्श होने न होने के प्रभाव को स्पष्ट देखा जा सकता है कि "स्त्री अबला नही है बल्कि वह अपनी शक्ति को पहचाने तो पुरुष से भी अधिक सबला है। वह माता के रुप में जिस प्रकार बालक को गढती है और पत्नी होकर पति को जिस तरह चलाती है बहुधा पुरुष वैसे ही बनते हैं। स्त्री वास्तव में त्याग की मूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।"[5]

आज पाश्चात्य सभ्यता के बढते प्रभाव को देखते हुए तो संस्कारयुक्त शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता एवं भौतिकता की अंधी दौड़ में मानव समाज को संवेदनहीन बना दिया है। वह अब अपनों को भी नहीं पहचानता। समाज में अपना नाम कमाने के लिए एवं अपने नाम का ही डंका बजे इसे लक्ष्य रखकर वह व्यक्ति किसी भी हद तक गिरने के लिए तत्पर है। मां, बहन, बेटियां कोई भी सुरक्षित नहीं है क्योंकि संत का चादर ओढे लोग भी नैतिक पतन में लिप्त हैं। हर गली, घाट, चौराहों पर असमाजिक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है। लोग एकांत एवं मौके की तलाश मे रहते हैं कि कब किसी के साथ किसी भी प्रकार से छल, कपट या जबरदस्ती के माध्यम से अत्याचार किया जाए एवं मानवता को शर्मशार कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह सब कुछ संसकारविहीन शिक्षा का ही दुष्परिणाम है। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के शोध की आवश्यता और बढ़ जाती है।

उद्देश्य (Objective) –

आदर्श नारी/मां से संस्कारयुक्त शिक्षा की स्थापना की संभाव्यता का अध्ययन।

परिकल्पना (Hypothesis)

1. एक शिक्षित आदर्श नारी/मां ही संतान को संस्कारयुक्त बनाती है।
2. आदर्श नारी/मां ही संतान को शिक्षित कर दिशा प्रदान करती है।

शोध विधि एवं न्यायदर्श चयन (Experimental design and Sampling)

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि एवं व्यक्ति इतिहास विधि का प्रयोग किया गया है सर्वेक्षण में 20 परिवारों का अध्ययन न्यायदर्श के रुप में किया गया है। सर्वेक्षण के आधार पर यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि आदर्श नारी/मां का बालक की शिक्षा एवं संस्कारों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार प्राप्त 20 परिवारो का निम्नानुसार प्रभाव तालिका से स्पष्ट है–

तालिका कमांक 2

ग्राम	परिवारों की संख्या	माता/आदर्श नारी की शिक्षा	बच्चों की संख्या	बच्चों की शिक्षा की स्थिति	संस्कारवान बच्चों की संख्या	कुसंस्कारवान बच्चों की संख्या
किटहा जिला सतना	05	01 अशिक्षित किंतु संस्कारवान	07	02 परास्नातक 03 स्नातक 02 पांचवी	05	02
किटहा जिला सतना		02 स्नातक एवं संस्कारवान	08	04 परास्नातक 04 हायर सेकेण्डरी	08	निरंक
किटहा जिला सतना		02 अशिक्षित एवं कुसंस्कारवान	09	01 स्नातक 05 अशिक्षित 03 पांचवी	01	08
डालीबाबा सतना	05	01 शिक्षित एवं संस्कारवान	04	02 स्नातक 02 अठवीं	04	निरंक
डालीबाबा सतना		04 अशिक्षित एवं संस्कारहीन	20	07 पांचवीं 08 अशिक्षित 05 आठवीं	निरंक	20
कोलार सतना	05	05 अशिक्षित एवं संस्कारहीन	22	03 पांचवीं 19 अशिक्षित	निरंक	22
तेलनी सतना	05	05 शिक्षित एवं संस्कारवन	18	02 परास्नातक 10 स्नातक 03 हायर सेकेण्डरी 03 आठवीं	18	निरंक

परिणाम एवं व्याख्या (Result and Discussion) –

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि शिक्षित मां की संतान भी शिक्षित एवं संस्कारवान होती है। तालिका में किटहा ग्राम के परिवारों का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि जिन परिवारों की मां शिक्षित एवं संस्कारवान थी उनकी संतान भी शिक्षित एवं संस्कारवान हुई उनमें अधिकाश ने सम्मानित स्थान एवं पदों को प्राप्त भी किया किंतु वे विनम्र एवं परोपकारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ भी हुयें, उन्हें पद का गर्व हैवान नहीं बना सका किंतु इसके विपरीत जिन 2 परिवारों में मां शिक्षित नहीं थी या कुमार्गगामी थी उनकी संतान भी कुमार्गगामी, अपराधी एवं संस्कारहीन हुई तथा कोई भी सम्मानित पद प्राप्त नहीं कर सकी। इसी प्रकार डालीबाबा स्थित 5 परिवारों में से 4 परिवारों में मां शिक्षित एवं आदर्श नारी के रूप में प्रतिष्ठित न होने के कारण उनकी संतानें अपराधी, चोर, कुमार्गगामी एवं व्याभिचारी हुई। कोलार ग्राम के अध्ययन से भी यह चौकाने वाला रहस्य उदघाटित हुआ कि मां के सुसंस्कृत न होने के कारण सभी संताने गलत मार्ग में चली गई। इसी प्रकार तेलनी ग्राम के 5 परिवारों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मां के शिक्षित एवं सुसंस्कृत होने के कारण सभी संतानों ने सम्मानित स्थान प्राप्त किया एवं संस्कारवान हुई।

व्यक्ति इतिहास विधि के अंतर्गत किये गये अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कौशिल्या, कैकेई एवं सुमित्रा जैसी आदर्श नारी/मां के कारण उनकी संतानें सुसंस्कारवान हुई जिनमें सीता और राम का नाम समाज में आज भी बड़े आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। ठीक इसके विपरीत कैकसी कुसंस्कारों एवं अशिक्षा के प्रभाव से रावण जैसे खलनायकों को जन्म दिया। वहीं केशनी/मालिनी/कौशिल्या के सुसंस्कारवान आदर्श नारी/मां के प्रभाव के कारण विभीषण जैसे महान भक्त पैदा हुए। इस प्रकार दोनों परिकल्पनाएं सत्यापित होती हैं।

सुझाव एवं संस्तुतियां (Suggestions and Recommendation) .

शोधार्थी ने अपने शोध के माध्यम से जो निष्कर्ष प्राप्त किये हैं कि आदर्श नारी/मां ही संस्कारयुक्त शिक्षा की आधारशिला है। आदर्श मां द्वारा ही सुसंस्कृत संतान जन्म लेती है जिससे आदर्श समाज की स्थापना संभव है। अतः बालिका शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए और उनमें स्वस्थ पर्यावरण जगाने के लिए शासन प्रशासन एवं समाज सेवी संस्थाओं को आगे आना चाहिए तथा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि उनकी शिक्षा व्यवस्था में ईर्ष्या, द्वेश, घृणा, भय, निर्दयता आदि हृदयहीनता जैसे दुर्गुणों को स्थान नहीं होना चाहिए। उनके स्थान पर प्रेम, सद्भावना, विनम्रता, भाईचारा, कर्त्तव्यपरायणता तथा मानवीय संवेदनाओं का बोध कराने वाली शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे उनके हृदय में छल, कपट, दंभ तथा व्याभिचार जैसे दुर्गुणों का स्थान न रहे क्योंकि आज की बालिका ही भविष्य की आदर्श नारी एवं आदर्श मां का स्थान लेती है जो समाज का निर्माण करती है।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव डॉ. पूजा भारतीय नारी का धर्म शास्त्रीय अध्ययन पृष्ठ क्रं 34, आराधना ब्रदर्स कानपुर, 2009.
2. रामायण अयोध्या कांड 20/14/15–87/18
3. शर्मा श्रीमती आर.के जनसंख्या, शिक्षा पृष्ठ क्र.110 राधाप्रकाशन मंदिर आगरा
4. शर्मा श्रीमती राजकुमारी अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पृष्ठ क्र. 65 राधाप्रकाशन मंदिर आगरा
5. जैन डॉ. दीपा महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस राजस्थान पृष्ठ क्र.129 हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2007